REVIEW OF RESEARCH

20 वीं सदी बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन

मनोज कुमार
शोध छात्र, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, ल०ना०मि०वि०, दरभंगा

भारतीय स्वाधीनता संग्राम बिहार का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शुरू में कुछ प्रयत्नों में बिना शर्त सहयोग देने की गांधीजी की नीति थी। इसी सिलसिले में कुछ दिनों बाद रंगरूटों की भर्ती में मदद करने के लिए गांधीजी पुनः बिहार के सदा में आये। पर उन्हें इस बार पहले अनुभव से विपरीत अनुभव हुआ। सेडा सत्याग्रह की लड़ाई में लोग उन्हें अपनी बैलगाडी मुफ्त दे देते थे। अब वह पैसे देने पर भी मिलना दुर्लभ थी। गांधीजी को गांव की सभाओं में पैदल जाना मुश्किल से गावों में एक या दो ही रंगरूट भर्ती के लिए मिलते। अक्सर उन्हें उत्तर मिलना ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान का क्या भला किया है कि हम उसके लिए लडेर गांधीजी उनके बीच आई इस जाग्रति से खुश हुए। उन्होंने देखा खेडा में ही नहीं सारे देश में इस तरह का असंतोष व्याप्त था। लोग करा के बोझ से पिस जा रहे थे। अनिच्छापूर्वक ही कर अदा करते थे। युद्ध–प्रयत्नों में भी दुखी मन से ही सहयोग देते थे। राजनैतिक क्षेत्र में भी सरकार ने न्याय को ताक पर रख दिया था। क्रांतिकारी गतिविधियों को तो बहुत ही बेरहमी से दवाया जाता था। इस पर भी युद्ध काल में तो संवैधानिक आंदोलनों को एक सीमा तक सड़न कर लिया गया। पर सरकार को भय हुआ कि युद्ध समाप्ति पर युद्ध–प्रयत्नों का समर्थन करने वाले लोग भी उनका लिहाज न कर उनके विरुद्ध षड्यंत्रों में शामिल हो सकते हैं। तो जन–असंतोष व षड़यंत्रों की स्थितियों की जांच के लिए एक कमेटी बैठा दी गयी। ऐसा जाहिर होता था कि कमेटी का सरोकार केवल क्रांतिकारी षड्यंत्रों की जाब से है। लेकिन बाद में स्पष्ट हुआ कि कमेटी को सभी प्रकार के राजनैतिक आदोलनों को दबाने के उपायों पर सिफारिशें देनी थीं। श्भारत रक्षा कानून युद्ध समाधि से छ महीने की अवधि के बाद समाप्त हो जाने वाला था। भारत सरकारइस रक्षा कानून के स्थान पर शायद और कड़े कानून बनाने के लिये स्वयं को असाधारण अधिकारों से लैस कर लेना चाहती थी। इस श्रौलेट कमेटीश ने दंडात्मक और निषेधात्मक दो प्रकार के उपयों की सिफारिश की। इस कानून के पास हो जाने से पुलिस अधिकारों में असाधारण वृद्धि होने वाली थी। किसी भी व्यक्ति को संदेह पर पकड़ा जा सकता था। लोगों के मुकदमों का फैसला, बिना किसी वकील के तथा अभियुक्त को सफाई का मौका दिये बिना किया जा सकता था। सारे भारत में इस काले कानून का विरोध हुआ। पर सरकार ने इसे भी पास कर दिया।

गांधीजी ने अंग्रेजों को बिना शर्त युद्ध में सहयोग दिया था। उन्हें आशा थी कि युद्ध में अंग्रेजों की जीत के बाद भारत में प्रशासन सुधारों के साथ स्वराज्य की पहली किश्त दे दी जायेगी। पर युद्ध के बाद अपना उल्लू सीधा होते ही अंग्रेजों ने अपने आश्वासनों के बदले जब इस तरह का काला कानून भारतीयों पर लाद दिया. तो गांधीजी ने इसे सहन नहीं किया। गांधीजी उस समय बीमार थे। स्वयं जूझने की स्थिति में न होने से उन्होंने अखवारों में श्रौलेट कमेटी की रिपोर्ट पर अपने सहयोगी वल्लभभाई पटेल को बुला कांग्रेस के बाहर ही आंदोलन शुरू करवा दिया। शीघ्र ही गाधीजी में शक्ति लौट आयी और सत्याग्रह सभा की स्थापना हो गयी। केन्द्र बंबई रखा गया। जगह–जगह प्रतिज्ञा पत्रों पर हजारों हस्ताक्षर होने लगे। पर्चे निकले। सभाए हुई। गांधीजी ने घोषणा की कि 30 मार्च को देश भर में दुकानों व कारखानों की हड़ताल रखी जाये।[1] हृदय–शुद्धि के लिए उपवास व ईश–प्रार्थना की जाये। साथ ही सार्वजनिक सभाओं का भी व्यापक पैमाने पर आयोजन किया

जाये। बाद में हडताल का दिन बदल कर 6 अप्रैल कर दिया गया। 6 अप्रैल को सारे भारत के नगरों–गांवों में हड़ताल हो गयी, किन्तु दिल्ली में पूर्व घोषित तिथि 30 मार्च को ही हडताल हुई क्योंकि तिथि बदलने की सूचना का तार वहा देर से पहुंचा। दिल्ली की हड़ताल खूब सफल रही, जिसमें हिन्दू–मुस्लिम एकता खूब कायम रही। संयोजक स्थानी श्रद्धानन्द और हकीम अजमल खां थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने जामा मस्जिद में भी व्याख्यान दिया। उन्हें गोली मारने की धमकी दी गयी, तो उन्होंने तुरंत अपना सीना खोल दिया था। हडताल के अलावा,अप्रिय कानूनों को भंग करने के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया था। गांधीजी ने आदेश दिया. नमक–कानून को रद्द कराने के लिए घरों में समुद्र–जल से नमक बनाया जाए और उनकी जब्त की गयी दो पुस्तकें 'सर्वोदय' व 'हिन्द स्वराज्य' खुले आम बेची जाएं। इन पुस्तकों की अतिरिक्त प्रतियां छपवाई गई और शाम को उपवास टूटने के बाद तथा चौपाटी पर सभा समाप्ति पर सारी प्रतियां बेच दी गई।

बिहार के इतिहास में श्री मजहरूल हक एक श्रद्वेय व्यक्ति हैं। श्री हक निष्ठावान राष्ट्रवादी थे। वर्षो तक भारत की स्वतंत्रता के हेतु ये अनेक तरह का बलिदान एव अप्रतिम संघर्ष करते रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 25वें अधिवेशन में (इलाहाबाद, दिसम्बर, 1910) श्री हक ने बडे ही उपयुक्त शब्दों में श्री जिन्ना द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का अनुमोदन किया था। इस प्रस्ताव में नगरपालिकाओं, जिला बोर्डो या अन्य स्थानीय निकायों में पृथक निर्वाचन प्रणाली (साम्प्रदायिक) के सिद्धान्त लागू – करने का विरोध किया गया था। प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए उन्होंने कहा था. 'मेरे विचार में भारत की सर्वाधिक प्रमुख वर्त्तमान समस्या दो मुख्य सम्प्रदायों को एकत्र करने की है जिसमें मातृभूमि के पुनरुत्थान के हेतु वे कंधे में कंधे मिलाकर काम कर सके। एक अन्य बिहारी देशभक्त सैयद हसन इमाम ने इस प्रस्ताव के समर्थन में जोरदार आवाज उठाई थी। श्री इमाम ने पृथक निर्वाचन प्रणाली को असीमित दुष्टतापूर्ण योजनाष कहकर उसकी आलोचना की थी तथा निष्कर्ष रूप में श्री इमाम ने कहा था, 'पृथक निर्वाचन प्रणाली भारत के प्रत्येक परिवार में चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, पारसी, जैन, ईसाई, सिख या अन्य किसी सम्प्रदाय का हो, अनेक उलझने पैदा कर देगी।' बिहार में 39 प्रतिनिधि कांग्रेस के इस अधिवेशन में भाग लेने आए थे। इनमें से दो ब्रजकिशोर प्रसाद तथा द्वारका नाथ ने न्यायिक सुधारों एवं स्वदेशी आन्दोलन संबंधी प्रस्तावों का अनुमोदन एवं समर्थन क्रमशः किया था। द्वारका नाथ ने दमनकारी कानूनों को हटाये जाने की मांग करनेवाले प्रस्ताव का भी समर्थन किया था। बिहार से विषय निर्वाचन समिति के सदस्य थे सैदयहसन इमाम, मजहरूल हक, दीपनारायण सिंह, हरिहर प्रसाद सिंह और परमेश्वर लाल।

1912 मातरीय इतिहास में एक स्मरणीय वर्ष है, विशेष करके दो कारणों से । इसी वर्ष स्थानीय जनता की मांग पर बिहार को बंगाल से पृथक करके एक अलग प्रात बनाया गया और इसी वर्ष बिहार की ऐतिहासिक भूमि पर पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ यह कांग्रेस का 27 वाँ अधिवेशन था। इसकी अध्यक्षता राव बहादुर आर. एन. मधोलकर ने की थी । श्री गजहरूल हक स्वागतकारिणी के अध्यक्ष थे। इसके उपाध्यक्षों की संख्या बीस थी। इनमें महत्त्वपूर्ण जन–नेता तथा जमीन्दार सम्मिलित थे। श्री सच्चिदानन्द सिन्हा इसके सचिव तथा कुमार नन्दन सहाय संयुक्त सचिव थे। इनके अतिरिक्त दस सहायक सचिव थे जिनमें श्री परमेश्वर लाल मुख्य थे। श्री लाल कांग्रेस स्वयंसेवकों के नायक भी थे। इस प्रकार बिहार में राजनैतिक नव जागरण पर शोध कार्य इतिहास में ज्ञानवर्धक एवं लाभप्रद होगा। बिहार में राजनैतिक जागरण से स्वाधीनता संग्राम को बल मिला तथा स्वाधीनता संग्राम में बिहार में सविनय अवज्ञा आन्दोलन की अहम भूमिका रही हैं।[2]

गाँधीजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण असहयोग आन्दोलन से देश की राजनीति में एक तूफान सा आ गया तथा अंग्रेजी राज्य की नीवें हिलने लगी। हजारों – हजार विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजो का बहिष्कार हजारी– किया। हजारों वकीलो ने वकालत को तिलांजलि देकर गाँधीजी के नेतृत्व में देशसेवा का व्रत लिया। मोतीलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, चित्तरंजन दास, बल्लभ भई पटेल. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रसिद्ध वकीलों ने सदा के लिए वकालत छोड़ दी। आचार्य जे०बी० कृपालानी ने प्रोफेसर के पद से इस्तीफा दे दिया। विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ जेसी राष्ट्रीय संस्थाएँ स्थापित हुई जिनमें भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाने लगी। लाखों लोगों ने विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार कर खादी पहनने काव्रत लिया। देश में उत्साह की एक लहर दौड़ गई तथा यह लोग आशा करने लगे कि स्वराज्य शीघ्र ही मिलनेवाला है।

असहयोग आन्दोलन की सफलता देखकर सरकार घबरा गई तथा उसने नेशनल कांग्रेस को एक गैर कानूनी संस्था घोषित कर असहयोग आन्दोलन में भाग लेनेवालों को गिरफ्तार करना शुरू किया। गाँधीजी को छोड़कर सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिए गए। इसी आन्दोलन में जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, बल्लभ भई पटेल तथा आचार्य कृपालानी जैसे नेताओं को पहली बार जेलयात्रा करनी पडी। गिरफ्तारियों के बावजूद

असहयोग आन्दोलन पूर्ववत चलता रहा। बिहार में आधुनिक राजनीतिक चेतना का जागरण कांग्रेस युग के प्रारंभिक दिनों से प्रारंभ होता है। इस प्रान्त में कुछ लोग बीसवीं शताब्दी के पहले पदशक में सामाजिक– सांस्कृतिक आन्दोलनों की ओर भी आकृष्ट हुए थे। सर्वेन्ट्स ऑफ इन्डिया सोसाइटी के उद्देश्य एवं कार्यक्रम से श्री राजेन्द्र प्रसाद जब कलकत्ता में छात्र ही थे, प्रभावित हुए थे।[3]

इस संबंध में राजेन्द्र बाबू ने अपने अग्रज को एक भावपूर्ण पत्र में इस आन्दोलन में अपने सम्मिलित होने की कामना प्रकट की थी तथा इसके लिए उनकी अनुमति मांगी थी। यह पत्र गोपाल कृष्ण गोखले से मिलने के 20 दिन बाद मार्च, 1910 में लिखा गया था। वर्त्तमान सदी के पहले दशक से ही आदर्शवाद एवं मातृभूमि की सेवा में अपने को समर्पित कर देने की कामना राजेन्द्र बाबू के मन में जग पड़ी थी, इसका कदाचित यह पत्र सबसे पहला प्रमाण प्रस्तुत करता है। अग्रज एवं परिवार के अन्य सदस्यों के समझाने बुलाने पर राजेन्द्र बाबू सर्वेन्ट्स ऑफ इन्डिया सोसाइटी के सदस्य नहीं बने किन्तु मानवता के प्रति प्रेम उनके मन–प्राण पर छा गया था। मुंगेर के कृष्ण प्रसाद, जो उन दिनों कानून का छात्र था, राजेन्द्र बाबू के साथ गोखले जी से मिला। तदुपरान्त सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी की कार्यपद्धति का अध्ययन करने के हेतु वह पूना गया था किन्तु कुछ कारणवश उनका सदस्य नहीं बन सका। मुजफ्फरपुर में बाबू रामदयालु सिंह इस सोसाइटी की ओर आकृष्ट हुए थे ।लेकिन इसके बाद का हमारा स्वाधीनता आन्दोलन जनता को प्रजातान्त्रिक शासन पद्धति के लिए तैयार करने वाला एक क्रमिक आन्दोलन था । उसका प्रारंभ विभिन्न संगठनों और क्रमिक प्रस्तावों–याचनाओं की नीति से हुआ. जिसमें आगे चलकर तीव्र अहिंसक आन्दोलन, गरम दल की गरमजोश गतिविधियां, उग्र क्रांतिकारी विस्फोट और अंत में कुछ सैनिक विद्रोहभी आ जुड़े। तब जाकर आजादी संभव हो पायी। यह 1857 की क्रांति का भारतीयों पर पड़ा दूसरा सीधा प्रभाव था जिसने क्रांति की विफलता से सबक ले, उन्हें मिल–बैठकर सोचने और संगठित शक्ति जुटाकर संघर्ष जारी रखने के लिए प्रेरित किया। स्वाधीनता संग्राम का अगला सारा इतिहास इसी प्रयत्न की क्रमिक सफलता का इतिहास है, जिसमें समाज–सुधार आन्दोलन और राष्ट्रीय आंदोलनों की साक्षी भूमिका है।

इस बीच की अवधि में भी कुछ विद्रोह हुए, जिनमें निलहों का 'विद्रोह और कूकाओं का विद्रोह' प्रसिद्ध है (कूका – विद्रोह में महिलाओं की भागीदारी भी रही). पर कुल मिला कर इस अवधि को शांति–काल और नव जागरण काल की ही संज्ञा दी जाती है। इसी लिए इस काल में महिलाओं ने भी जन–जागरण व स्त्री–शिक्षा के क्षेत्र में ही अपनी प्रमुख भूमिका निभाई, जो अगले स्वातंर्त्य संघर्ष के लिए अच्छी पृष्ठभूमि बनी।[4]

बंगाल में नवजागरण की यह लहर राजा राम मोहन राय के समय से फैली। महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन की भी अखंड भारत की राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही– बंगाल के समाचार पत्र–पत्रिकाओं की भी अनेक क्रांतिकारी पुस्तकें और संस्थाएं भी सामने आई, जिनसे राष्ट्रीय चेतना को बल मिला और उसका प्रसार हुआ। पर इस काल की एक प्रमुख घटना है, विदेशी शिक्षा के प्रभाव से पढे लिख भारतीयों के एक नए बौद्धिक वर्ग का निर्माण, जिसने यूरोपीयन दर्शन, राजनीति फ्रांस–क्रांति और रूसों, वाल्टेयर, मैजिनी का अध्ययन कर अपने भीतर उदार जनतंत्रीय विचारों को आत्मसात किया (आगे चलकर देश का सामाजिक व राजनैतिक नेतृत्व इसी वर्ग ने किया)। लंबी अवधि से राजभक्ति और व्यक्ति पूजा के अभ्यस्त भारतीयों ने लेखन भाषण की आजादी और मानवीय अधिकारों पर सोचा, विचारा। देश की आजादी का स्वप्न पूरे देश के संदर्भ में देखा जाने लगा। गुलामी को प्रगति में बाधक जान, राष्ट्रीयता के विचार की भारत में पुनस्थापना हुई, जिसने नई प्रेरणा जगाई ।

राजनीति व धर्म का समन्वय हमारी पुरानी राष्ट्रीय परंपरा थी। नव जागरण काल में भी इन दोनों धाराओं को अलग करके देखना कठिन है। राजनैतिक आजादी पहले या समाज–सुधार पहले? इस पर कुछ मतभेद के चावजूद दोनों लक्ष्य मिला लिये गये और दोनों दिशाओं में साथ–साथ काम होने लगा। इसी संदर्भ में हिन्दू समाज में सुधार व कुरीतियों के निवारण पर भी सोचा गया तो वहा समाज आर्य समाज थियोसोफिकल सोसाइटी नाम धारी संप्रदाय जैसी सस्थाएं सामने आई, जिनमें समाज सुधार द्वारा जनजग्रति और स्वतंत्रता के लिए तैयारी इन दोनों बातों पर समान ध्यान दिया गया।

ब्रह्म समाज की स्थापना सन् 1828 में राजा राममोहन राय ने कलकत्ता में की थी। इसकी स्थानीय शाखाओं में प्रारंभ से ही महिलाओं की भागीदारी रही। प्रेरणा पुरुषो की ही थी। कार्यकम मुख्यतः पूजा–प्रार्थना ही होता था। लेकिन सभाओं का मुख्य उद्देश्यरू सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना था । ब्रह्म समाज पहली संस्था थी जिसने महिलाओं के पृथक अस्तित्व को मान्यता दी। उन्हें घरा से बाहर कार्य के लिए अवसर व

प्रोत्साहन दिया। महिलाएं ब्रह्म समाज की सभाओं में नियमित भाग लेती थीं। महिला शिक्षा समाज सेवा, स्वतंत्रता की भावना पर साथ–साथ जोर था।

राजा राममोहन राय समाजसुधारों के क्षेत्र में अग्रणी माने जाते हैं। हिन्दू समाज की कुरीतियों के निवारण में उनका योगदान अविस्मरणीय है। इसके साथ ही उन्होंने अधिकार प्राप्ति के लिए अंग्रेजी शिक्षा और भारतीय समाचार–पत्रों की स्वतंत्रता पर भी जोर दिया। पर यह एक कडुवा सच है कि सबसे पहले भारतीयों ने ही (जिनमें प्रमुख राजा राममोहन राय), न कि कंपनी सरकार ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के लिए बल दिया। भारतीयों द्वारा प्रबल विरोध के डर सेअंग्रेज तो इस प्रस्ताव को कुछ वर्षो तक टालते रहे थे। पर ऊंचे पदों पर पहुंचने के लिए भारतीय नेताओं द्वारा अंग्रेजी भाषा का ज्ञान जरूरी समझा गया।

इस प्रक्रिया के अच्छे–बुरे दुहरे परिणाम हुए एक ओर यह महत्वाकाक्षा भारत में अंग्रेजी राज्य की जड़ जमाने का प्रबल साधन बनी दूसरी ओर विदेशी शिक्षा के प्रभाव ने भारत में फिर से प्रजातांत्रिक पद्धति से सोचने वालों का निर्माण किया। उच्च वर्ग के भारतीयों की अंग्रेजी शिक्षा, आंशिक रूप में ही सही. उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति से लेकर बाद में काउन्सिलों के भी आशिक भारतीयकरण में सहायक हुई। इसी लिए राजा राममोहन राय को भारत में सामाजिक सुधारों का ही नहीं, राजनैतिक आंदोलन का भी अग्रदूत माना जाता है।

दूसरा बड़ा सुधारक आंदोलन शुरू करने वाले आर्य समाज की स्थापना 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में स्वामी दयानंद ने की थी। स्वामी दयानन्द ने भी स्त्री–शिक्षा का समर्थन किया और हिन्दू समाज की बुराइयों को अंत कर स्त्री–शिक्षा का समर्थन किया और हिन्दू समाज की बुराइयों का अंत कर स्त्री–पुरुष के लिए समान उच्च मानवीय बौद्धिक गुणों का समर्थन किया। इससे भी स्त्रियों के लिए सामाजिक और राजनैतिक जीवन का मार्ग खुला ।

इसके बाद रामकृष्ण मिशन, वेद समाज, प्रार्थना समाज आदि अस्तित्व में आए। इन संस्थाओं ने भी भारतीय अध्यात्म–दर्शन पर प्रकाश डालने के साथ राष्ट्रीय नवजागरण तथा स्त्री जागरण में अपना पर्याप्त योग दिया। थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना मैडम ब्लावत्सकी और कर्नल आलकाट ने 1875 में अमरीका में की थी।श 1876 में मैडम ब्लावत्सकी भारत आ गयी और उन्होंने 1879 में अडयार (तमिलनाडु) मे मुख्यालय बनाकर भारत के प्रमुख नगरों में इस संस्था की शाखाएं स्थापित की। मूलतः यह संस्था सभी धर्मों के मौलिक सिद्धांतों में विश्वास करती थी। अतः इसका उद्देश्य विश्वव्यापी मानव समाज में भ्रातृभाव उत्पन्न करना था। तो इससे भी स्त्री–स्वातंर्त्य और स्त्री नेतृत्व को बल मिला। ऐनी बेसेंट ने इस संस्था के निमंत्रण पर भारत आकर 1893 से इस संस्था का संचालन किया।

इस आदोलन में महिलाओं की विशेष भूमिका रही। बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब की महिलाएं अधिक ही सक्रिय थी। उन दिनों घोर अशिक्षा के कारण महिलाओं में विशेष जाग्रति नहीं थी। फिर भी इस अवसर से वे पीछे नहीं रहीं। गांव–गांव के घर–घर महिलाएं चर्खा चलाती ही थी, अब उनका प्रचार जोरों से होने लगा। राष्ट्रीय फंड में पैसा और आभूषण दान दिया जाने लगा। घर–घर मुट्टी भर अनाज के रूप में भी आंदोलन फंड जमा हो रहा था। मुर्शिदाबाद जिले के बोनोद गांव में स्वदेशी प्रचार के लिए 500 महिलाओं की सभा हुई, जिसमें कई स्त्रियों ने आभूषण दिए । प्रांतीय सम्मेलन में तारा प्रसन्न बोस की पत्नी सरोजिनी बोस व श्रीमती गांगुली ने स्वराज्य तक आभूषण न पहनने की शपथ ली। क्रिस्टो मित्तर की लडकी कुमारी कुमुदिनी मित्तर इस अवधि में बहुत सक्रिय नहीं । नोआखाली की भागवती ने काली का आहवान करते हुए राष्ट्रीय गान लिखे ।

विभिन्न आंदोलनों से गुजरते हुए भारत से अंग्रेजी शासन का अंत करने के लिए यद्यपि लंबा समय लगा, पर इमें उस प्रजातांत्रिक पद्धति का भी हाथ था. जिसका पोषण अंग्रेजों ने दीर्घ काल तक अपने देश में किया था। 1857 का संघर्ष मुख्यतः अंग्रेजों और भारतीय राजाओं के बीच का संघर्ष था. सही मायने में जन–संघर्ष नहीं, क्योंकि तब अंग्रेजों को अपने देश से निकाल उनके स्थान पर मुगल शासन को पुनर्स्थापित करने या जिन राजाओं, नवाबों, पेशवाओं से अंग्रेजों ने भक्ति छीन ली थी, उन्हें ही फिर से अपनी–अपनी जगह सत्तारूढ करने का प्रयास किया गया था। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इस प्रसंग में एक घटना है। दिल्ली के अंतिम दादशाह बहादुरशाह ने राजपूत राजाओं को पत्रण देते हुए अपने पत्र में यह भी लिखा था कि दिल्ली के सिंहासन रंग परस्पर सहमति से जिसे चाहे पदासीन कर दें, पर इस समय मूहिक शक्ति से अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना होना ना राज्य बचाए अनेक राजा अलग बैठे रहे, जिससे मिला। पर यह निश्चित है कि तब इसका उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रजातंत्र की स्थापना करना न था, न ही इसमें जनता की बहुत बडी भागीदारी थी। विफलता के कारणों में से यह भी एक बड़ा कारण था।

संदर्भ सूची :–

1. The early nationalists have made possible the superstructure story by storey- of Colomal Self & government] Home Rule within the Empire- Swaraj and on the top of all complete Independence-" & P Sitarammaya- - *History of the Indian National Congress*] P- 155 2
2. विधानचन्द्र, अमलेश त्रिपाठी एवं वरुण के द्वारा उद्धृत फ्रीडम स्ट्रगल (नई दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट 19728) पृ० 801
3. "Bengal was partitioned and Curzon returned to Britain but India was never the same again" P-Speat- A History of India' Vol & II. (Penguin Books & p- 167-1965)
4. उद्धृत कैम्बिज हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इम्पायर पृ० 557&581
5. पट्टाभि सीतारमैया हिस्ट्री ऑफ इण्डियन नेशनल कांग्रेस जिल्द 1- पृ० 11।
6. "Started in 1906 with British encouragement and in order to keep away the new generation of Moslems from the National Congress] it remained a Small Upper & Class organization controlled by feudal elements- It had no influence on the Moslem masses and was hardly known by them"- & Nehru] The Discovery of India' P-301.
7. जवाहरलाल नेहरू आत्मकथा पृ० 177 (एलायड पब्लिसर्स दिल्ली, 1962)।
8. "Sir Pherozeshah had seemed to me like the Himalayas the Lokamanya like the ocean- But gokhale was as the Ganges- One could have a refreshing bath in the holy river."
9. महात्मा गाँधी, आत्मकथा (अंग्रेजी). पृष्ठ 133 ।